दैनिक

email: shahardayaranews@gmail.com

शहर दायरा न्यूज़

हिन्दी/अंग्रेजी द्विभाषीय

https://www.facebook.com/shahardayaranews/

वर्ष 9 अंक: 311 | कानपुर, बुधवार 3 जुलाई 2024 | पृष्ठ: 8 | मूल्य-2.00 ₹

ऑक्सीटॉसिन इंजेक्शन विषय पर विस्तार से जानकारी की साझा

शहर दायरा न्यूज

कानपुर। सीएसए के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह द्वारा वैज्ञानिकों को जारी निर्देश के क्रम में पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ पीके उपाध्याय ने दूध को विषैला करने के साथ मवेशियों एवं मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव डालता है ऑक्सीटॉसिन इंजेक्शन विषय पर विस्तार से जानकारी साझा की है डॉ उपाध्याय ने बताया कि अधिकतर पशुपालक दुधारू पशुओं को ऑक्सीटॉसिन नामक इंजेक्शन लगाकर दूध निकालते हैं जो दुधारू पशुओं एवं मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव डालता है उन्होंने बताया कि ऑक्सीटोसिन हार्मोन मस्तिष्क में स्थित पिट्यूटरी ग्रंथि से स्रावित होता है। ऑक्सीटोसिन हार्मोन का प्रभाव शरीर में 5 से 7 मिनट तक रहता है उन्होंने बताया कि पशु पालकों की यह धारणा गलत है कि इंजेक्शन लगाने से दूध उत्पादन में वृद्धि हो जाती है केवल अयन से दूध जल्दी बाहर आ जाता है उन्होंने बताया कि इंजेक्शन द्वारा अलग से शरीर में ऑक्सीटॉसिन देने से शरीर में हार्मोन अतिरिक्त मात्रा में हो जाता है जिससे

दुधारू पशुओं में दुष्प्रभाव पड़ता है जैसे पशु धीरे-धीरे बांझ हो जाता है एवं गर्भित पशु में भ्रूण गिरना, पशु का बार बार गर्मी में आना लेकिन गर्भधारण न करना, प्रजनन अंगों में दुष्प्रभाव पड़ना, बच्चेदानी का बाहर निकल आना आदि समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं डॉ उपाध्याय ने बताया कि पशुपालकों की लापरवाही के कारण पशु अनुपयोगी हो जाते हैं जिससे उनके बेशकीमती पशु कौड़ियों के भाव में बिकते हैं और उन्हें आर्थिक हानि उठानी पड़ती है उन्होंने बताया कि इंजेक्शन द्वारा लगातार दूध निकालते रहने से दूध में ऑक्सीटोसिन हार्मोन की सूक्ष्म मात्रा दूध में आ जाती है जिससे मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ता है जैसे पुरुषों एवं महिलाओं में बांझपन की समस्या, लड़कियों का उम्र से पहले वयस्क होना, महिलाओं में गर्भपात का खतरा, बच्चों में दृष्टि दोष की संभावना बढ़ जाती है। डॉ उपाध्याय ने बताया कि हमारे देश में ऑक्सीटॉसिन इंजेक्शन पूर्ण रूप से प्रतिबंधित किया जा चुका है कानूनी तौर पर इसका प्रयोग दंडनीय अपराध है जो कि पशु क्रूरता रोकथाम अधिनियम के अंतर्गत आता है डॉ उपाध्याय ने पशुपालकों को सलाह दी है कि दुधारू पशुओं से स्वतः दूध उतारने के लिए पशुओं को संतुलित एवं स्वादिष्ट आहार खिलाए, प्रसन्न चित्त प्यार दुलार एवं भयमुक्त वातावरण में रखकर ऑक्सीटॉसिन से मुक्त दूध प्राप्त करें।जिससे दूध उपभोग करने वाले व्यक्तियों को स्वस्थ एवं जानलेवा बीमारियों से सुरक्षित रख सकते हैं तथा पशुधन का स्वास्थ्य ही सही रहेगा

जन एक्सप्रेस

लखनऊ
वर्षः 15 | अंकः 259
मूल्यः ₹3.00/-
पेज : 12

@janexpressnews janexpresslive janexpresslive www.janexpresslive.com/epaper

बुधवार | 03 जुलाई, 2024

ऑक्सीटॉसिन इंजेक्शन मानव जीवन और दुधारू पशुओं पर डालता है दुष्प्रभाव : प्रो.पी.के. उपाध्याय

जन एक्सप्रेस । कानपुर नगर

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ. पी.के.उपाध्याय ने दूध को विषैला करने के साथ मवेशियों एवं मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव डालने वाले ऑक्सीटॉसिन इंजेक्शन विषय पर जानकारी दी। उन्होंने बताया कि अधिकतर पशुपालक दुधारू पशुओं को ऑक्सीटॉसिन नामक इंजेक्शन लगाकर दूध निकालते हैं जो दुधारू पशुओं एवं मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव डालता है।

उन्होंने बताया कि ऑक्सीटोसिन हार्मोन मस्तिष्क में स्थित पिट्यूटरी ग्रंथि से स्रावित होता है जिसका प्रभाव शरीर में 5 से 7 मिनट तक रहता है उन्होंने बताया कि पशु पालकों की यह धारणा गलत है कि इंजेक्शन लगाने से दूध उत्पादन में वृद्धि हो जाती है। केवल अयन से दूध जल्दी बाहर आ जाता है। उन्होंने बताया कि इंजेक्शन द्वारा अलग से शरीर में ऑक्सीटॉसिन देने से शरीर

में हार्मोन अतिरिक्त मात्रा में हो जाता है। जिससे दुधारू पशुओं में दुष्प्रभाव पड़ता है जैसे पशु धीरे-धीरे बांझ हो जाता है एवं गर्भित पशु में भ्रूण गिरना, पशु का बार बार गर्मी में आना लेकिन गर्भधारण न करना, प्रजनन अंगों में दुष्प्रभाव पड़ना, बच्चेदानी का बाहर निकल आना आदि समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं।

डॉ. उपाध्याय ने बताया कि पशुपालकों की लापरवाही के कारण पशु अनुपयोगी हो जाते हैं।जिससे उनके बेशकीमती पशु कौड़ियों के भाव में बिकते हैं और उन्हें आर्थिक हानि उठानी पड़ती है। उन्होंने बताया कि इंजेक्शन द्वारा लगातार दूध निकालते रहने से दूध में ऑक्सीटोसिन हार्मोन की सूक्ष्म मात्रा दूध में आ जाती है जिससे मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ता है। ऐसे दूध के सेवन से पुरुषों एवं महिलाओं में बांझपन की समस्या, लड़कियों का उम्र से पहले वयस्क होना, महिलाओं में गर्भपात का खतरा, बच्चों में दृष्टि दोष की संभावना बढ़ जाती है। डॉ.उपाध्याय ने बताया कि हमारे देश में ऑक्सीटॉसिन इंजेक्शन पूर्ण रूप से प्रतिबंधित किया जा चुका है व कानूनी तौर पर इसका प्रयोग दंडनीय अपराध है जो कि पशु क्रूरता रोकथाम अधिनियम के अंतर्गत आता है। उन्होंने पशुपालकों को दुधारू पशुओं से स्वतः दूध उतारने के लिए पशुओं को संतुलित एवं स्वादिष्ट आहार खिलाने, प्रसन्न चित्त प्यार दुलार एवं भयमुक्त वातावरण में रखने की सलाह दी। जिससे उन्हें ऑक्सीटॉसिन से मुक्त दूध प्राप्त हो सके और दूध उपभोग करने वाले व्यक्ति भी स्वस्थ एवं जानलेवा बीमारियों से सुरक्षित रह सके।

दूध को विषैला करने के साथ ही मवेशियों एवं मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव डालता है ऑक्सीटॉसिन इंजेक्शन

कानपुर, 2 जुलाई। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ आनन्द कुमार सिंह की ओर से वैज्ञानिकों को जारी निर्देश के क्रम में आज पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान विभाग के प्रो. डॉ पीके उपाध्याय ने दूध को विषैला करने के साथ मवेशियों एवं मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव डालता है ऑक्सीटॉसिन इंजेक्शन विषय पर विस्तार से जानकारी साझा की है।डॉ उपाध्याय ने बताया कि अधिकतर पशुपालक दुधारू पशुओं को ऑक्सीटॉसिन नामक इंजेक्शन लगाकर दूध निकालते हैं जो दुधारू पशुओं एवं मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव डालता है। उन्होंने बताया कि ऑक्सीटोसिन हार्मोन मस्तिष्क में स्थित पिट्यूटरी ग्रंथि से स्रावित होता है। ऑक्सीटोसिन हार्मोन का प्रभाव शरीर में 5 से 7 मिनट तक रहता है। उन्होंने बताया कि पशु पालकों की यह धारणा गलत है कि इंजेक्शन लगाने से दूध उत्पादन में वृद्धि हो जाती है। केवल अयन से दूध जल्दी बाहर आ जाता है। उन्होंने बताया कि इंजेक्शन द्वारा अलग से शरीर में ऑक्सीटॉसिन देने से शरीर में हार्मोन अतिरिक्त मात्रा में हो जाता है। जिससे दुधारू पशुओं में दुष्प्रभाव पड़ता है। जैसे पशु धीरे-धीरे बांझ हो जाता है एवं गर्भित पशु में भ्रूण गिरना, पशु का बार बार गर्मी में आना लेकिन गर्भधारण न करना, प्रजनन अंगों में दुष्प्रभाव पड़ना, बच्चेदानी का बाहर निकल आना आदि समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं। डॉ उपाध्याय ने बताया कि पशुपालकों की लापरवाही के कारण पशु अनुपयोगी हो जाते हैं। जिससे उनके बेशकीमती पशु कौडियों के भाव में बिकते हैं और उन्हें आर्थिक हानि उठानी पड़ती है। उन्होंने बताया कि इंजेक्शन द्वारा लगातार दूध निकालते रहने से दूध में ऑक्सीटोसिन हार्मोन की सूक्ष्म मात्रा दूध में आ जाती है जिससे मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ता है। जैसे पुरुषों एवं महिलाओं में बांझपन की समस्या, लड़कियों का उम्र से पहले वयस्क होना, महिलाओं में गर्भपात का खतरा, बच्चों में दृष्टि दोष की संभावना बढ़ जाती है।

सूर्यास्त 07.12
न्यूनतम 27.0°
72,200
88,000

कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित वर्ष : 16 अंक : 05 कानपुर, बुधवार 03 जुलाई 2024 नगर संस्करण पृष्ठ 12 मूल्य : 2.00 रुपए

राष्ट्रीय स्वरूप

htriyaswaroop.in

चोटिल एरिना सबालेंका, विक्टोरिया अजारेंका ... 10

ऑक्सीटॉसिन इंजेक्शन विषय पर विस्तार से जानकारी की साझा

कानपुर । सीएसए के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह द्वारा वैज्ञानिकों को जारी निर्देश के क्रम में पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ पीके उपाध्याय ने दूध को विषैला करने के साथ मवेशियों एवं मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव डालता है ऑक्सीटॉसिन इंजेक्शन विषय पर विस्तार से जानकारी साझा की है।डॉ उपाध्याय ने बताया कि अधिकतर पशुपालक दुधारू पशुओं को ऑक्सीटॉसिन नामक इंजेक्शन लगाकर दूध निकालते हैं जो दुधारू पशुओं एवं मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव डालता है। उन्होंने बताया कि ऑक्सीटोसिन हार्मोन मस्तिष्क में स्थित पिट्यूटरी ग्रंथि से स्रावित होता है। ऑक्सीटोसिन हार्मोन का प्रभाव शरीर में 5 से 7 मिनट तक रहता है उन्होंने बताया कि पशु पालकों की यह धारणा गलत है कि इंजेक्शन लगाने से दूध उत्पादन में वृद्धि हो जाती है। केवल अयन से दूध जल्दी बाहर आ जाता है। उन्होंने बताया कि इंजेक्शन द्वारा अलग से शरीर में ऑक्सीटॉसिन देने से शरीर में हार्मोन अतिरिक्त मात्रा में हो जाता है। जिससे दुधारू पशुओं में दुष्प्रभाव पड़ता है जैसे पशु धीरे-धीरे बांझ हो जाता है एवं गर्भित पशु में भ्रूण गिरना,

पशु का बार बार गर्मी में आना लेकिन गर्भधारण न करना, प्रजनन अंगों में दुष्प्रभाव पड़ना, बच्चेदानी का बाहर निकल आना आदि समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं। डॉ उपाध्याय ने बताया कि पशुपालकों की लापरवाही के कारण पशु अनुपयोगी हो जाते हैं।जिससे उनके बेशकीमती पशु कौड़ियों के भाव में बिकते हैं और उन्हें आर्थिक हानि उठानी पड़ती है। उन्होंने बताया कि इंजेक्शन द्वारा लगातार दूध निकालते रहने से दूध में ऑक्सीटोसिन हार्मोन की सूक्ष्म मात्रा दूध में आ जाती है जिससे मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ता है।जैसे पुरुषों एवं महिलाओं में बांझपन की समस्या, लड़कियों का उम्र से पहले वयस्क होना, महिलाओं में गर्भपात का खतरा, बच्चों में दृष्टि दोष की संभावना बढ़ जाती है। डॉ उपाध्याय ने बताया कि हमारे देश में ऑक्सीटॉसिन इंजेक्शन पूर्ण रूप से प्रतिबंधित किया जा चुका है। कानूनी तौर पर इसका प्रयोग दंडनीय अपराध है जो कि पशु क्रूरता रोकथाम अधिनियम के अंतर्गत आता है। डॉ उपाध्याय ने पशुपालकों को सलाह दी है कि दुधारू पशुओं से स्वतः दूध उतारने के लिए पशुओं को संतुलित एवं स्वादिष्ट आहार खिलाए, प्रसन्न चित्त प्यार दुलार एवं भयमुक्त वातावरण में रखकर ऑक्सीटॉसिन से मुक्त दूध प्राप्त करें।जिससे दूध उपभोग करने वाले व्यक्तियों को स्वस्थ एवं जानलेवा बीमारियों से सुरक्षित रख सकते हैं। तथा पशुधन का स्वास्थ्य ही सही रहेगा।

सर्वाइकल कैंसर के खिलाफ टीकाकरण अभियान चलाए सरकार
पेज-11

-पाञ्चजन्य @epanchjanya

नौ NBFC ने आरबीआई को प्रमाणपत्र लौटाए
पेज-15

www.facebook.com/rashtriyasahara https://twitter.com/SaharaRashtriya www..rashtriyasahara.com

राष्ट्रीय सहारा
राष्ट्रीयता ■ कर्तव्य ■ समर्पण

■ कानपुर ■ नई दिल्ली ■ लखनऊ ■ गोरखपुर ■ पटना ■ देहरादून ■ वाराणसी से प्रकाशित

कानपुर
बुधवार • 3 जुलाई • 2024
पृष्ठ 16, मूल्य ₹ 4.00

चांदी ₹ 90,000 | शेयर | सेंसेक्स 79,441 -35 | निफ्टी 24,124 -18 | विनिमय दर ₹/$ 83.50 -0.06 | मौसम (कानपुर) तापमान अधिकतम

8:22 am

ऑक्सीटोसिन लगाने से पशुओं का दूध बढ़ने की धारणा गलत

कानपुर (एसएनबी)। ऑक्सीटोसिन का इंजेक्शन दूध को विषैला करने के साथ ही मवेशियों एवं मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव डालता है। यह धारणा गलत है कि इससे पशुओं के दूध में वृद्धि हो जाती है। इसके लगाने से सिर्फ दूध जल्दी निकल आता है। यह पशुओं को तो बांझ करता ही है साथ ही दुग्ध का उपयोग करने वाली महिलाओं के लिये भी कई समस्याएं उत्पन्न करता है।

यह जानकारी चंद्रशेखर आजाद कृषि विश्वविद्यालय के पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ. पीके उपाध्याय ने दी। उन्होंने ऑक्सीटोसिन के संबंध में पशु पालकों के लिये एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने कहा कि अधिकतर पशुपालक दुधारू पशुओं को ऑक्सीटोसिन नामक इंजेक्शन लगाकर दूध निकालते हैं, जो दुधारू पशुओं एवं मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव डालता है। उन्होंने बताया कि ऑक्सीटोसिन हार्मोन मस्तिष्क में स्थित पिट्यूटरी ग्रंथि से स्रावित होता है।

■ इंजेक्शन के असर से सिर्फ दूध जल्दी बाहर आ जाता है

■ ऑक्सीटोसिन से दुग्ध होता विषैला

■ पशु होते जाते बांझ महिलाओं में भी आती हैं कई समस्याएं

ऑक्सीटोसिन हार्मोन का प्रभाव शरीर में 5 से 7 मिनट तक रहता है। उन्होंने बताया कि पशु पालकों की यह धारणा गलत है कि इंजेक्शन लगाने से दूध उत्पादन में वृद्धि हो जाती है। इंजेक्शन लगाने से केवल दूध जल्दी बाहर आ जाता है। उन्होंने बताया कि इंजेक्शन द्वारा अलग से शरीर में ऑक्सीटोसिन देने से शरीर में हार्मोन अतिरिक्त मात्रा में हो जाता है, जिससे दुधारू पशुओं में दुष्प्रभाव पड़ता है, जैसे पशु धीरे-धीरे बांझ हो जाता है एवं गर्भित पशु में भ्रूण गिरना, पशु का बार बार गर्मी में आना लेकिन गर्भधारण न करना, प्रजनन अंगों में दुष्प्रभाव पड़ना, बच्चेदानी का बाहर निकल आना आदि समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं।

डॉ. उपाध्याय ने बताया कि पशुपालकों की लापरवाही के कारण पशु अनुपयोगी हो जाते हैं, जिससे उनके बेशकीमती पशु कौड़ियों के भाव में बिकते हैं और उन्हें आर्थिक हानि उठानी पड़ती है। उन्होंने बताया कि इंजेक्शन द्वारा लगातार दूध निकालते रहने से दूध में ऑक्सीटोसिन हार्मोन की सूक्ष्म मात्रा दूध में आ जाती है, जिससे मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ता है। पुरुषों एवं महिलाओं में बांझपन की समस्या, लड़कियों का उम्र से पहले वयस्क होना, महिलाओं में गर्भपात का खतरा, बच्चों में दृष्टि दोष की संभावना बढ़ जाती है।

डॉ. उपाध्याय ने बताया कि हमारे देश में ऑक्सीटोसिन इंजेक्शन पूर्ण रूप से प्रतिबंधित किया जा चुका है। कानूनी तौर पर इसका प्रयोग दंडनीय अपराध है, जो कि पशु क्रूरता रोकथाम अधिनियम के अंतर्गत आता है। उन्होंने पशुपालकों को सलाह दी है कि दुधारू पशुओं से स्वतः दूध उतारने के लिए पशुओं को संतुलित एवं स्वादिष्ट आहार खिलाएं, प्रसन्नचित्त प्यार दुलार एवं भयमुक्त वातावरण में रखकर ऑक्सीटोसिन से मुक्त दूध प्राप्त करें, जिससे दूध उपभोग करने वाले व्यक्तियों को स्वस्थ एवं जानलेवा बीमारियों से सुरक्षित रख सकते हैं तथा पशुधन का स्वास्थ्य भी सही रहेगा।

8:22 am

वर्ष 08, अंक 109, कानपुर, बुधवार, 3 जुलाई 2024
पृष्ठ- 08, मूल्य- 02 रुपये www.shashwattimes.com
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

शाश्वत टाइम्स

दूध को विषैला करने के साथ ही मवेशियों एवं मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव डालता है ऑक्सीटॉसिन इंजेक्शनः डॉक्टर पीके उपाध्याय

शाश्वत टाइम्स

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह द्वारा वैज्ञानिकों को जारी निर्देश के क्रम में आज पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ पीके उपाध्याय ने दूध को विषैला करने के साथ मवेशियों एवं मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव डालता है ऑक्सीटॉसिन इंजेक्शन विषय पर विस्तार से जानकारी साझा की है।डॉ उपाध्याय ने बताया कि अधिकतर पशुपालक दुधारू पशुओं को ऑक्सीटॉसिन नामक इंजेक्शन लगाकर दूध निकालते हैं जो दुधारू पशुओं एवं मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव डालता है। उन्होंने बताया कि ऑक्सीटोसिन हार्मोन मस्तिष्क में स्थित पिट्यूटरी ग्रंथि से स्रावित होता है। ऑक्सीटोसिन हार्मोन का प्रभाव शरीर में 5 से 7 मिनट तक रहता है उन्होंने बताया कि पशु पालकों की यह धारणा गलत है कि इंजेक्शन लगाने से दूध उत्पादन में वृद्धि हो जाती है। केवल अयन से दूध जल्दी बाहर आ जाता है। उन्होंने बताया कि इंजेक्शन द्वारा अलग से शरीर में ऑक्सीटॉसिन देने से शरीर में हार्मोन अतिरिक्त मात्रा में हो जाता है। जिससे दुधारू पशुओं में दुष्प्रभाव पड़ता है जैसे पशु धीरे-धीरे बांझ हो जाता है एवं गर्भित पशु में भ्रूण गिरना, पशु का बार बार गर्मी में आना लेकिन गर्भधारण न करना, प्रजनन अंगों में दुष्प्रभाव पड़ना, बच्चेदानी का बाहर निकल आना आदि समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं। कानूनी तौर पर इसका प्रयोग दंडनीय अपराध है जो कि पशु क्रूरता रोकथाम अधिनियम के अंतर्गत आता है। डॉ उपाध्याय ने पशुपालकों को सलाह दी है कि दुधारू पशुओं से स्वतः दूध उतारने के लिए पशुओं को संतुलित एवं स्वादिष्ट आहार खिलाए, प्रसन्न चित्त प्यार दुलार एवं भयमुक्त वातावरण में रखकर ऑक्सीटॉसिन से मुक्त दूध प्राप्त करें।जिससे दूध उपभोग करने वाले व्यक्तियों को स्वस्थ एवं जानलेवा बीमारियों से सुरक्षित रख सकते हैं। तथा पशुधन का स्वास्थ्य ही सही रहेगा।

अंक-123 कानपुर, बुधवार 3 जुलाई 2024 पृष्ठ-8

दैनिक

आज का कानपुर

कानपुर से प्रकाशित लखनऊ, उन्नाव, सीतापुर, लखीमपुर खीरी, हमीरपुर, मौदहा, बादा, फतेहपुर, प्रयागराज, इटावा, कन्नौज, गाजीपुर, कानपुर देहात, सुल्तानपुर, अमेठी, बहराइच में प्रसारित

ऑक्सीटॉसिन इंजेक्शन विषय पर विस्तार से जानकारी की साझा

आज का कानपुर

कानपुर । सीएसए के कुलपति डॉक्टर आनन्द कुमार सिंह द्वारा वैज्ञानिकों को जारी निर्देश के क्रम में पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान विभाग के प्रोफेसर डॉ पीके उपाध्याय ने दूध को विषैला करने के साथ मवेशियों एवं मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव डालता है ऑक्सीटॉसिन इंजेक्शन विषय पर विस्तार से जानकारी साझा की है डॉ उपाध्याय ने बताया कि अधिकतर पशुपालक दुधारू पशुओं को ऑक्सीटॉसिन नामक इंजेक्शन लगाकर दूध निकालते हैं जो दुधारू पशुओं एवं मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव डालता है उन्होंने बताया कि ऑक्सीटोसिन हार्मोन मस्तिष्क में स्थित पिट्यूटरी ग्रंथि से स्रावित होता है। ऑक्सीटोसिन हार्मोन का प्रभाव शरीर में 5 से 7 मिनट तक रहता है उन्होंने बताया कि पशु पालकों की यह धारणा गलत है कि इंजेक्शन लगाने से दूध उत्पादन में वृद्धि हो जाती है केवल अयन से दूध जल्दी बाहर आ जाता है उन्होंने बताया कि इंजेक्शन द्वारा अलग से शरीर में ऑक्सीटॉसिन देने से शरीर में हार्मोन अतिरिक्त मात्रा में हो जाता है जिससे दुधारू पशुओं में दुष्प्रभाव पड़ता है जैसे पशु धीरे-धीरे बांझ हो जाता है एवं गर्भित पशु में भ्रूण गिरना, पशु का बार बार गर्मी में आना लेकिन गर्भधारण न करना, प्रजनन अंगों में दुष्प्रभाव पड़ना, बच्चेदानी का बाहर निकल आना आदि समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं डॉ उपाध्याय ने बताया कि पशुपालकों की लापरवाही के कारण पशु अनुपयोगी हो जाते हैं जिससे उनके बेशकीमती पशु कौड़ियों के भाव में बिकते हैं और उन्हें आर्थिक हानि उठानी पड़ती है उन्होंने बताया कि इंजेक्शन द्वारा लगातार दूध निकालते रहने से दूध में ऑक्सीटोसिन हार्मोन की सूक्ष्म मात्रा दूध में आ जाती है जिससे मानव स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ता है जैसे पुरुषों एवं महिलाओं में बांझपन की समस्या, लड़कियों का उम्र से पहले वयस्क होना, महिलाओं में गर्भपात का खतरा, बच्चों में दृष्टि दोष की संभावना बढ़ जाती है। डॉ उपाध्याय ने बताया कि हमारे देश में ऑक्सीटॉसिन इंजेक्शन पूर्ण रूप से प्रतिबंधित किया जा चुका है कानूनी तौर पर इसका प्रयोग दंडनीय अपराध है जो कि पशु क्रूरता रोकथाम अधिनियम के अंतर्गत आता है डॉ उपाध्याय ने पशुपालकों को

सलाह दी है कि दुधारू पशुओं से स्वतः दूध उतारने के लिए पशुओं को संतुलित एवं स्वादिष्ट आहार खिलाए, प्रसन्न चित्त प्यार दुलार एवं भयमुक्त वातावरण में रखकर ऑक्सीटॉसिन से मुक्त दूध प्राप्त करें जिससे दूध उपभोग करने वाले व्यक्तियों को स्वस्थ एवं जानलेवा बीमारियों से सुरक्षित रख सकते हैं तथा पशुधन का स्वास्थ्य ही सही रहेगा।